# २३ - आने वाले संकट में बचाव

1

अन्तिम ७ विपत्तियों से कैसे बचें।

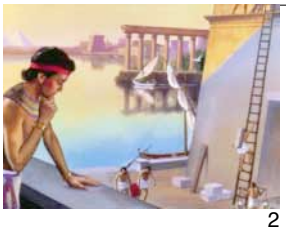
2

स्थान था मिस्र – अर्थात अपने समय का सर्वाधिक सभ्य राष्ट्र। वर्ष – १४४५ ईसा पूर्व।

पिछले २१५ वर्षो तक इस्राएली वहां बन्धुवाई में रहे थे। अन्तिम शताब्दी कड़वी दासता की थी। मित्रवत फिरौन जो यूसुफ को जानते थे और उसके प्रशंसक थे वे बहुत पहले ही मर चुके थे।

3

नये शासकों ने इस्राएलियों की तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या को देश की सुरक्षा के लिए खतरे के रुप में देखा। इस बात से भयभीत होते हुए कि युद्ध की स्थिति में इस्राएली मिस्र के शत्रुओं से मिल सकते थे मिस्रियों ने इस्राएलियों को बलपूर्वक दास बना लिया।

4

( मूलपाठः निर्गमन १:१२)

किन्तु बाइबिल बताती है, "पर ज्यों -ज्यों वे उनको दुख देते गये,

5

त्यों -त्यों वे बढ़ते और फैलते गए।" निर्गमन १:१२

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

6

( मूलपाठः निर्गमन २:२३,२४)

"और इस्त्राएली कठिन सेवा के कारण लम्बी -लम्बी सांस लेकर आहें भरने लगे,

7

और पुकार उठे, और उनकी दोहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह परमेश्वर तक पहुँची।

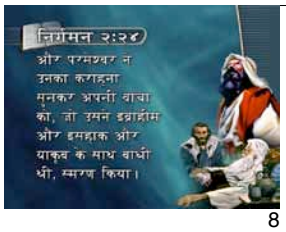

8

और परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उसने अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ बांधी थी, स्मरण किया।"

निर्गमन २ : २३, २४

9

४०० से भी अधिक वर्ष हो चुके थे जब परमेश्वर मे अब्राहम से उसके वंश और उनके छुटकारे के विषय में वाचा बांधी थी। अब अन्तः वह समय आ ही गया। परमेश्वर तैयार था और उसके छुडाने जाने वाले भी तैयार थे !

10

वे अर्थात परमेश्वर और मूसा किसी महल में नहीं किसी विशाल शुण्डाकार स्तम्भ की छाया में नहीं, किन्तु बाहर मिधान के रेगिस्तान में एक जलती झाडी के पास मिले।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

11

( मूलपाठः निर्गमन ३:७-८)

"और यहोवा ने कहा, निश्चय मैंने मिस्त्र में रहने वाली अपनी प्रजा की पीड़ा को देखा है,

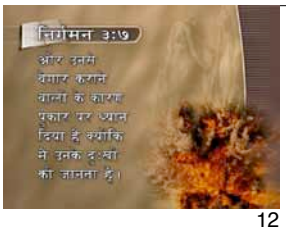

12

और उनसे बेगार कराने वालों के कारण पुकार पर ध्यान दिया है क्योंकि मैं उनके दुःखों को जानता हूँ।

13

अतः मैं उतर आया हूँ कि उनको मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊँ ..."

निर्गमन ३:७, ८

मूसा से बोलते हुए परमेश्वर ने कहा:

14

( मूलपाठः निर्गमन ३:१०)

"इसलिए अब आ मैं तुझे फिरौन के पास भेजूंगा

15

जिससे कि तू मेरी प्रजा अर्थात इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आये।"

निर्गमन ३:१०

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

16

मूसा को मिस्र राजमहल छोड़े हुए ४० वर्ष हो चुके थे। मिस्र की भाषा बोले उसे ४० वर्ष हो चुके थे। यथार्थ में इस पूरे समय में उसने एकान्त रेगिस्तान में भेड़ों की देख -रेख की थी। वह आत्म विश्वास अब जाता रहा जो मिस्र में एक युवा राजकुमार के रुप में उसे प्राप्त था। बाईबिल कहती है

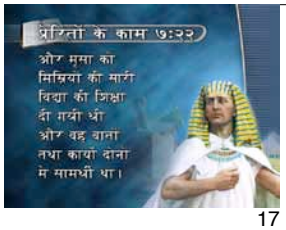


17

( मूलपाठ : प्रेरितों के काम ७:२२)

"और मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या की शिक्षा दी गयी थी और वह बातों तथा कार्यों दोनों में सामर्थी था।"

प्रेरितों के काम ७:२२

18

किन्तु रेगिस्तान में मूसा ने मात्र नम्रता ही नहीं सीखी उसने भेड़ों की देखभाल करने के द्वारा धैर्य और कोमलता सीखी। अब परमेश्वर ने अनुभव किया कि मूसा इस्राएल को छुडाने के लिए और उसके लोगों की पिता समान देखभाल करने के लिए तैयार था। मूसा ने नम्रता से परमेश्वर के आदेश का पालन किया और जो बात उस समय असंभव प्रतीत होती थी, स्वीकार कर ली।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

19

इस महान कार्य को पूरा करने में मूसा की सहायता हेतु परमेश्वर ने उसके बडे भाई हारुन जो मिस्र में एक दास था -उसको बाहर जाने और मूसा से मिलने का आदेश दिया। हारुन न केवल उसे नैतिक समर्थन देगा, किन्तु परमेश्वर ने उसे मूसा का प्रवक्ता भी नियुक्त किया, क्योंकि मूसा ने अनेक वर्षो से मिस्री भाषा नहीं बोली थी।

20

दोनो भाई परमेश्वर के भेजे गये दूत होने का दावा करते हुए फिरौन के महल में गये। उन्होंने परमेश्वर के नाम में बातें की और उसकी महान सामर्थ के विषय में बताया। घमंडी सम्राट की अभिमान भरी दृष्टि एक क्षण के लिए इस अस्वभाविक दृष्य में अवश्य खो गयी होगी। उसके सामने दो भाई खड़े थे, एक दीन मिद्दानी चरवाहा जो अभी भी अपनी छड़ी थामें खड़ा था और दूसरा स्थानीय इब्रानी दास, दोनों ही परमेश्वर जिसकी वे सेवा करते थे के महान सामर्थ की घोषणा कर रहे थे। जब हारून ने कहा कि वे यहोवा की ओर से एक संदेश ले कर आये थे कि फिरौन उसके लोगों को जाने दे, फिरौन ने घृणा से नाक सिकोड़ी।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

21

(मूलपाठः निर्गमन ५:२)

"... यहोवा कौन है कि मै उसकी बात मानकर इस्राएलियों को जाने दूँ?

22

मैं यहोवा को नहीं जानता और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूँगा।" निर्गमन ५:२

हजारों दास जो उसकी इच्छानुसार बेगारी के लिए उपलब्ध थे उन्हें जाने देने की फिरौन की निश्चय ही इच्छा न थी। हारुन के निवेदन की कठोर प्रतिक्रिया हुई। राजा ने इस्राएलियों पर काम का बोझ और बढ़ा दिया।

23

किन्तु शीघ्र ही परमेश्वर फिरौन पर अपनी महान शक्ति प्रकट करने वाला था और अपना परिचय देने वाला था। मूसा और हारुन द्वारा फिरौन को चेतावनी दी गयी थी कि जब तक वह उसके लोगों को बंधुवाई से मुक्त नहीं करेगा, परमेश्वर मिस्र पर एक के बाद एक विपत्तियाँ डालेगा। तब फिरौन के लिए परमेश्वर का सन्देश थाः

24

( मूलपाठः निर्गमन ७:१७)

"इससे तू जान लेगा कि मै यहोवा हूँ।" निर्गमन ७:१७

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

25

अधिक देर न हुई थी कि विपत्तियां आनी आरम्भ हो गई। पूरी दस। हर विपत्ति के आने से पूर्व मूसा और हारून ने फिरौन को आने वाले न्याय के विषय इस आशा से चेतावनी दी कि वह आप और अपनी प्रजा को विनाश से बचाने के लिए परमेश्वर के लोगों को मुक्त करने का फैसला करेगा।

किन्तु फिरौन हठ पर अड़ा रहा। और परमेश्वर के वचन के अनुसार विचित्र संकट मिस्रियों पर आये।

26

( दृश्य)

पहली, नील नदी जिसे मिस्री एक देवता के समान पूजते थे, हारुन के जल पर छड़ी मारते ही लहू में बदल गयी। सारी मच्छलियाँ मर गयीं और मिस्र का समस्त जल सात दिन के लिए लहू बन गया। किन्तु फिरौन ने परमेश्वर के लोगों को मुक्त करने से इन्कार कर दिया!

27

दूसरी, मेंढकों की विपत्ति ने भूमि को ढक दिया। लाखों मेंढक भोजन में, बिस्तरों में, और प्रत्येक जगह फैल गए। फिर भी हठी राजा ने इस्राएल को जाने देने से इन्कार कर दिया।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

28

इसके बाद कुटकियों की विपत्ति आयी किन्तु घमण्डी शासक लोगों को जाने देने के लिए सहमत नहीं हुआ। ध्यान दीजिए कि पहली तीन विपत्तियाँ इब्रानियों और मिस्रियों दोनो पर आयीं। परन्तु अन्तिम सात विपत्तियाँ केवल मिस्रियों पर ही आई।

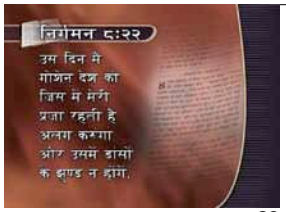


29

( मूलपाठः निर्गमन ८:२२-२३)

"उस दिन मैं गोशेन देश को जिस में मेरी प्रजा रहती है अलग करूंगा और उसमें डांसों के झुण्ड न होंगें,

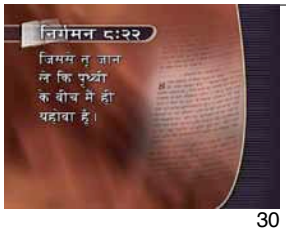


30

जिससे तू जान ले कि पृथ्वी के बीच मैं ही यहोवा हूँ।

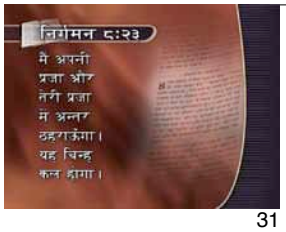


31

मैं अपनी प्रजा और तेरी प्रजा में अन्तर ठहराऊँगा। यह चिन्ह कल होगा।"

निर्गमन ८:२२,२३

32

इसके बाद डांसों की विपत्ति आई जिससे फिरौन का भवन भर गया।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

33

डांसों के बाद सर्वाधिक भयानक महामारी ने देश में फैल कर मैदान में पाये गये सब पशुओं को नष्ट कर दिया। अब तक फिरौन काफी जिज्ञासु हो गया था। क्या इब्रानियों के भी पशु मारे गये थे या जैसा मूसा ने घोषणा की थी, वे सुरक्षित थे?

34

( मूलपाठः निर्गमन ९:७)
"और फिरौन ने लोगों को भेजा पर इस्राएलियों के पशुओं में से एक भी नहीं मरा था।

35

तौभी फिरौन का मन सुन्न हो गया, और उसने उन लोगों को जाने न दिया।"
निर्गमन ९:७

36

छठी विपत्ति मनुष्य और पशुओं पर फोड़े लेकर आयी किन्तु फिर भी हठी सम्राट ने इस्राएलियों को मुक्त करने से इन्कार कर दिया।

37

अगली भविष्यवाणी ने ओलों की विपत्ति की पूर्ण घोषणा की।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

38

( दृश्य)

तब परमेश्वर ने वचन दिया कि वे सब जो स्वयं को और अपने पशुओं को सुरक्षित रखेंगे वे नहीं मरेंगे। समाचार शीघ्र ही पूरे देश में फैल गया, और बहुत से मिस्रियों ने अपने पशुओं सहित स्वयं को सुरक्षित कर लिया। गर्जन और बिजली की चमक के साथ ओले आए और वे सब जो इसके लिए तैयार न थे मर गए!

39

( दृश्य)

मिस्रियों ने स्पष्ट देख लिया था कि पृथ्वी परमेश्वर के नियन्त्रण में थी, और उनकी एक मात्र सुरक्षा उसकी आज्ञा मानने में ही थी। कुछ क्षणों के लिए फिरौन के मन में परमेश्वर की आज्ञा मानने और उन लोगों को जाने देने का विचार आया किन्तु जैसे ही विपत्ति समाप्त हुई उसकी यह इच्छा भी जाती रही।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

40

( दृश्य)

मूसा ने फिरौन को चेतावनी दी कि यदि उसने इस्राएलियों को जाने न दिया तो अगली विपत्ति टिडिडयों का झुण्ड होगा। अधिक विपत्तियों के विचार से भयभीत होकर फिरौन के सलाहकारों ने उससे दासों को जाने देने का आग्रह किया, किन्तु राजा ने फिर भी इन्कार कर दिया। और जैसा कहा गया था टिडिडयाँ आ गयीं।

41

इसके उपरान्त तीन दिन तक गहन अंधकार छाया रहा, किन्तु विद्रोही फिरौन स्वर्ग के परमेश्वर का अनादर करता रहा।

42

मूसा ने कहा कि एक और अन्तिम और भयानक विपत्ति मिस्रियों पर डाली जाएगी। एक नाश करने वाला दूत आधी रात को देश में से होकर निकलेगा और मिस्रियों के पहिलौठों को, चाहे वे मनुष्य के हों या पशुओं के, मार डालेगा।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

43

( दृश्य)

पुनः इस्राएलियों को बचा लिया जाना था। किन्तु इस बार इस्राएली होना या गोशेन में रहना ही पर्याप्त नहीं था। मृत्यु के दण्ड से बचने के लिए प्रत्येक परिवार को एक मेम्ने का वध करने का और परमेश्वर में उनकी भक्ति और विश्वास के प्रतीक स्वरुप उसका कुछ लहू दरवाजे की चौखट पर लगाने का निर्देश दिया गया था। और परमेश्वर ने वचन दिया:

44

( मूलपाठः निर्गमन १२:१३)

"और मैं उस लहू को देखकर तुम्हें छोड़ता जाऊँगा,

45

और जब मै मिस्र देश को मारूंगा तो वह विपत्ति तुम पर न पडेगी और न ही तुम नाश होगे।" निर्गमन १२:१३

46

कैसा यह दृश्य होगा उस रात। हजारों इस्राएली परिवार और अनेक मिस्री अपने दरवाजों पर खड़े देख रहे थे, जब पिता ने लहू का बर्तन एक हाथ में लेकर और जूफे की टहनी दूसरे हाथ में लेकर चौखट पर लहु छिड़का। और कल्पना की जा सकती है कि उस रात सर्वाधिक चिन्तित दिखने वाले हर परिवार के पहलौठे बच्चे ही थे।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

47

( मूलपाठः निर्गमन १२:२९)

"ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश के सब पहिलौठों को मार डाला,

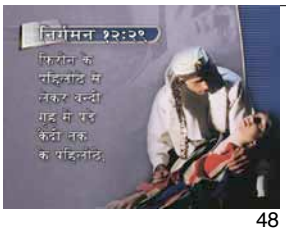

48

फिरौन के पहिलौठे से लेकर बन्दी गृह में पड़े कैदी तक के पहिलौठे,

49

तथा पशुओं के सब पहिलौठे।"

निर्गमन १२:२९

50

तब भी परमेश्वर के निर्देश के अनुसार जितने घरों की चौखट पर लहू छिड़का गया था उनमें से एक पर भी यह विपत्ति नहीं आई।

51

पूरे मिस्र देश में रोने वालों का स्वर सुना जा सकता था। और कपकपाते घुटनों के साथ फिरौन ने याद किया कि किस प्रकार उसने इस्राएलियों के परमेश्वर का उपहास किया था और उसके विरोध में नथुने फड़फड़ाए थे:

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

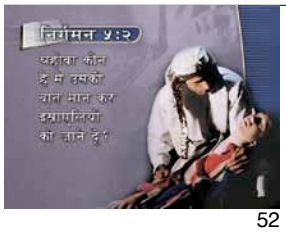

52

( मूलपाठः निर्गमन ५:२)

"यहोवा कौन है मै उसकी बात मान कर इस्राएलियों को जाने दूँ?"

निर्गमन ५:२

अब वह जान चुका था। नम्रता से उसने और उसके सलाहकारों ने दोनो इस्राएली भाइयों को बुलाया और उनसे इस्राएलियों को शीघ्र ले जाने और मिस्र देश छोड़ने का आग्रह किया क्योंकि डरते थे कि कहीं सब न मर जाएँ।

53

( दृश्य)

आधी रात होते ही परमेश्वर के लोग, जिन्होंने उसे अपने छुड़ाने वाले के रूप में चुन लिया था, मुक्त कर दिये गये। और परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उन्होने उस घड़ी के लिये तैयारी की थी। पांव में जूते और देह पर वस्त्र पहिने वे उस महान निर्गमन के लिये तैयार थे। वे प्रतिज्ञा के उस देश की ओर प्रस्थान कर रहे थे!

54

"अच्छा" आप कह सकते हैं कि यह एक मनोरंजक कहानी है, किन्तु इसका हम बीसवीं सदी में रहने वालों के लिये क्या महत्व हो सकता है?" यह महत्वहीन प्रतीत हो सकती है किन्तु है नहीं। यथार्थ में, यह इससे अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सकती थी।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

55

आप जानते हैं कि नये नियम में हम अन्तिम घटनाओं का विवरण देने वाली भविष्यवाणियाँ पाते हैं –वे घटनाएँ जो पृथ्वी पर घटित होंगी। ये भविष्यवाणियाँ पूरी तरह स्पष्ट कर देतीं हैं कि एक बार विनाशकारी स्तर पर पुनः विपत्तियाँ पड़ेंगी।

56

जी हाँ, बाईबिल की भविष्यवाणी के अनुसार इतिहास दोहराया जायेगा। इस बार दस विपतियाँ नहीं किन्तु सात, और जिसके बाद परमेश्वर के लोगों का छुटकारा होगा। मिस्र से नहीं, किन्तु एक विद्रोही ग्रह से।

57

किन्तु जिस प्रकार इस्राएलियों ने मिस्र से छुटकारे से पूर्व भारी दुःख के समय को सहन किया था और मिस्रियों पर विपत्तियाँ पड़ती हुई देखी थी,

58

उसी प्रकार परमेश्वर के लोग सात अन्तिम विपत्तियों को मसीह के आगमन से पूर्व दुष्टों पर आते हुए देखेंगे। दानिय्येल भविष्यवक्ता इस कष्ट के समय का वर्णन करता है:

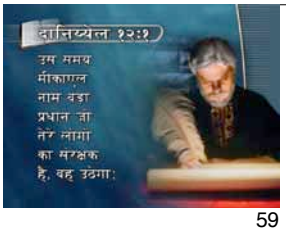

59

( मूलपाठः दानिय्येल १२:१)
"उस समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान जो तेरे लोगों का संरक्षक है, वह उठेगा;

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

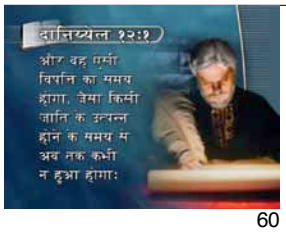

60

और वह ऐसी विपत्ति का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से अब तक कभी न हुआ होगा:

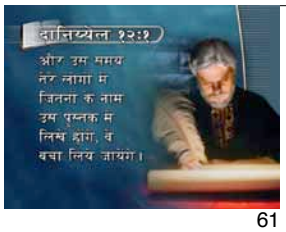

61

और उस समय तेरे लोगों में जितनों के नाम उस पुस्तक में लिखे होंगे, वे बचा लिये जायेंगे।"
दानिय्येल १२:१

62

"सनातन सुसमाचार" सम्पूर्ण संसार में प्रचार किया जा चुका होगा। दूसरे स्वर्गदूत की पुकार "बाबुल से निकल आओ" ( या उपासना की झूठी पद्धति से निकल आओ) दी जा चुकी होगी। और प्रत्येक मनुष्य के लिए तीसरा स्वर्गदूत घोषणा करता है:

63

( मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य १४:९-१०)
"यदि कोई उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे और अपने माथे पर या हाथ पर उसकी छाप लगवाये,

64

तो वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पियेगा।"
प्रकाशितवाक्य १४:९, १०

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

65

नाशवान मनुष्यों को सम्बोधित यह बाइबिल की सर्वाधिक भयानक चेतावनी है। किन्तु जब तक विचाराधीन विषय पृथ्वी वासियों के सामने स्पष्ट न कर दिये जायें और उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं अथवा मनुष्यों की आज्ञाओं में से एक को चुनने का अवसर न दिया जाये, तब तक कोई भी न तो पशु की छाप लेगा और "न परमेश्वर के
प्रकोप की मदिरा पीएगा।"

66

किन्तु जब यह सब पूरा हो जाएगा तो मनुष्य के लिए अनुग्रह का द्वार सदा के लिए बन्द हो जाएगा।

67

और यह गंभीर घोषणा की जायेगी: "जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है वह मलिन ही बना रहे:

68

और जो धर्मी है वह धर्मी बना रहे: और जो पवित्र है वह पवित्र बना रहे।"
प्रकाशितवाक्य २२:११

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

69

हमारे महायाजक के रुप में मसीह का कार्य समाप्त हो चुका है। प्रत्येक मुकदद्में का अनन्त जीवन या अनन्त मृत्यु के लिये निर्णय हो चुका है। परमेश्वर के अनुग्रह का द्वार बन्द है। अब पृथ्वी के रहने वाले, दानिय्येल भविष्यवक्ता के कथन के अनुसार 'संकट के समय' का अनुभव करेंगें।

70

और सुनिये, मित्र, जब तक विपत्तियाँ समाप्त नहीं हो जातीं परमेश्वर अपने लोगों को नहीं उठाएगा। वे अन्त तक पृथ्वी पर ही होंगे। वे इस्राएलियों के समान विपत्तियों से बचाये जायेंगे, किन्तु वे कष्टों और दुखों से मुक्त न होंगे। प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह संकट का समय होगा।

71

और मित्र, पृथ्वी के इतिहास के इस काल का सर्वाधिक स्पष्ट वर्णन इसकी सम्पूर्ण वास्तविकता को नहीं बता सकता जब दुष्ट परमेश्वर के क्रोध की दयाविहीन मदिरा का प्याला पीते हैं।

यूहन्ना को दशन में इस भयानक संकट का समय दिखाया गया था जो यीशु के आने और उसके लोगों के उद्धार से ठीक पहले आयेगा।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

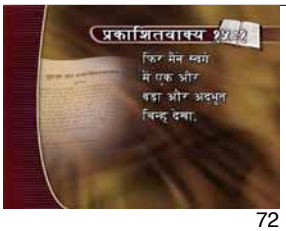

72

( मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १५:१)

"फिर मैंने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिन्ह देखा,

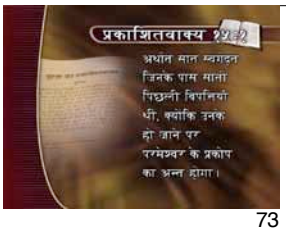

73

अर्थात सात स्वर्गदूत जिनके पास सातों पिछली विपत्तियाँ थीं, क्योंकि उनके हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का अन्त होगा।"

प्रकाशितवाक्य १५:१

और यूहन्ना ने पुनः लिखाः

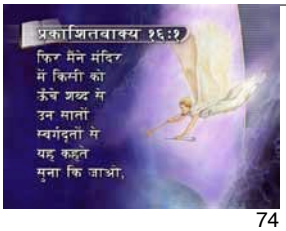

74

(मूलपाठः प्रकाशित व्वाक्य १६:१)

"फिर मैंने मंदिर में किसी को ऊँचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों से यह कहते सुना कि जाओ,

75

और परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उंडेल दो।"

प्रकाशितवाक्य १६:१

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

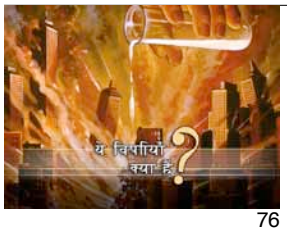

76

"किन्तु" आप पूछते हैं, ये भयानक विपत्तियाँ क्या हैं जो सात स्वर्गदूतों द्वारा दुष्टों पर उंडेली जानी है? " यह एक अच्छा प्रश्न है। जब हम इन विपतियों के विषय पढ़ते हैं तो आप इनके और मिस्र पर पड़ीं विपतियों के बीच एक चौकाने वाली समानता पायेंगे। आइए पढ़ें कि यूहन्ना पहिले स्वर्गदूत के विषय में क्या कहता है:

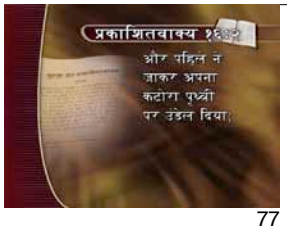

77

( मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:२)
"और पहिले ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उंडेल दिया;

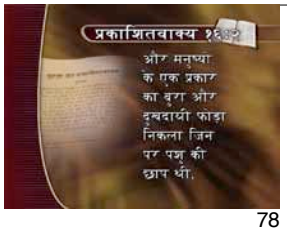

78

और जिन मनुष्यों के एक प्रकार का बुरा और दुखदायी फोड़ा निकला जिन पर पशु की छाप थी,

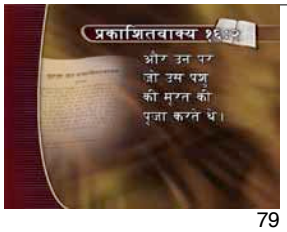

79

और उन पर जो उस पशु की मूरत की पूजा करते थे।"
प्रकाशितवाक्य १६:२

80

संभवतः ये फोड़े उन फोड़ों और फफोलों के समान हैं जो मिस्रियों पर उनकी सातवीं विपति के दौरान निकले। या वे कुछ उन फोड़ों के समान हो सकते थे जैसे अय्यूब ने सहन किए थे।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

81

क्या आप ऐसी विपत्ति के प्रभाव की कल्पना कर सकते हैं? विद्यालय बन्द हो जायेंगे।

82

उद्योग और कारखाने बन्द हो जाएंगे।

दुकानें खुल नहीं पायेंगी।

83

आपातकालीन इलाज चाहने वाले लोगों से अस्पताल भरे होंगे, किन्तु अधिकतर डाक्टर और नर्से भी उसी कष्ट से पीड़ित होंगे।

और तब, जब लोग अपने घावों से पीड़ित होंगे तब उन पर दूसरी विपत्ति टूट पड़ेगी!

84

( मुलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:३)

"और दूसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा समुद्र पर उंडेल दिया और वह मरे हुए का सा लहू बन गया, और समुद्र में का हर एक जीव मर गया।"

प्रकाशितवाक्य १६:३

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

85

क्या दृश्य होगा और क्या ही दुर्गंध होगी, जब सड़ते समुद्री
प्राणी किनारों पर बहकर आ जाएंगे। लोग किनारों पर से शीघ्र भागने के चक्कर में एक दूसरे से ठोकर खा रहे होंगे। किन्तु तीसरी विपत्ति दूसरी से काफी मिलती -जुलती है।

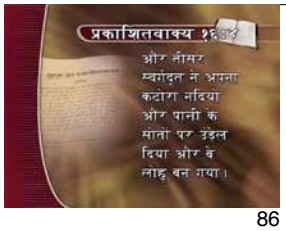


86

( मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:४)
"और तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा नदियों और पानी के सोतों पर उंड़ेल दिया और वे लोहू बन गया।"
प्रकाशितवाक्य १६:४

87

थोड़ा सोचिए!
एक व्यक्ति पानी पीने के लिए टोंटी खोलता है और पानी के स्थान पर लहू निकलता है!
कैसा परिणाम होगा!
क्या इससे बुरा भी कुछ हो सकता है?
ये सात विपत्तियाँ अति पीढ़ादायक और भयानक हो सकती हैं, किन्तु परमेश्वर का यह न्याय पूर्णतया उचित ठहराया गया है। क्योंकि स्वर्गदूत घोषणा करता है:

# २३ - आने वाले संकट में बचाव



88

( मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:५-६)

"तू न्यायी है हे प्रभु क्योंकि तूने इन बातों का न्याय किया है।



89

क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों और नबियों का लहू बहाया था,



90

और तूने उन्हें लोहू पिलाया।"

प्रकाशितवाक्य १६:५,६

इस समय दुष्ट प्यास के मारे मर रहे हैं और उनके पास पीने के लिए केवल लहू है। किन्तु जो धार्मिकता से चलते हैं उनके लिये प्रतिज्ञा की गई है:



91

( मूलपाठः यशायाह ३३:१६)

"... उसको रोटी मिलेगी और पानी की घटी कभी न होगी।"

यशायाह ३३:१६



92

( मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:८ -९)

और तब बाइबिल कहती है किः "और चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा सूर्य पर उंड़ेला और मनुष्यों को अग्नि से झुलसाने का अधिकार उसे दिया।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

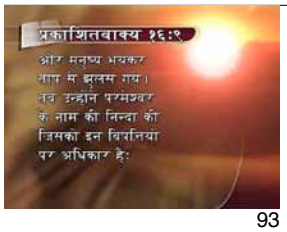


93 और मनुष्य भयंकर ताप से झुलस गये। तब उन्होंने परमेश्वर के नाम की निन्दा की जिसको इन विपत्तियों पर अधिकार है:

94 परन्तु मन न फिराया कि उसे महिमा दें।"

प्रकाशितवाक्य १६:८,९

तब पांचवे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा पशु के मुख्यालय पर उंड़ेल दिया:

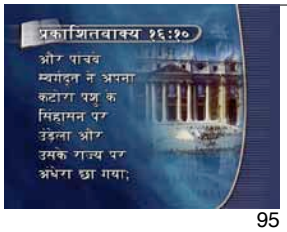


95 ( मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:१०-११ )

"और पांचवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा पशु के सिंहासन पर उंड़ेला और उसके राज्य पर अंधेरा छा गया;

96 और पीड़ा के मारे लोगों की जीभ ऐंठने लगी,

97 और वे अपनी पीड़ा और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा करने लगे,

98 फिर भी उन्होंने अपने- अपने कामों से पश्चाताप न किया।"

प्रकाशितवाक्य १६:१०,११

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

99

इस पद में हम पाते हैं कि ये विपतियाँ न तो विश्वव्यापी हैं और न ही तुरन्त प्राण घातक, क्योंकि यहाँ हम पाते हैं कि जो पांचवी विपति के अधीन है वे अभी भी प्रथम विपति के फोड़ों से पीड़ित हैं। लगता है कि विपतियाँ एक साथ आने के बजाय एक के बाद दूसरी आती हैं क्योंकि उनका प्रभाव एक से दूसरे तक बना रहता है। छठी विपति पर हर-मगिदोन की बड़ी लड़ाई आती है:

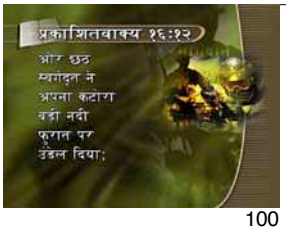

100

( मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:१२ -१४ )
"और छठे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा बड़ी नदी फुरात पर उंडेल दिया

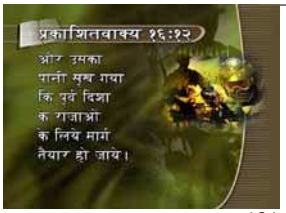

101

और उसका पानी सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो जाये।

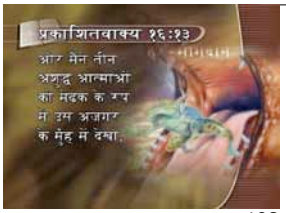

102

और मैंने तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढक के रूप में उस अजगर के मुँह में देखा,

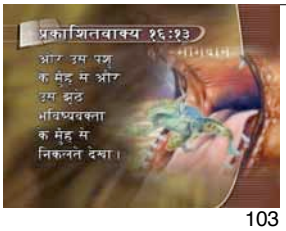

103

और उस पशु के मुँह से और उस झूठे भविष्यवक्ता के मुँह से निकलते देखा।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

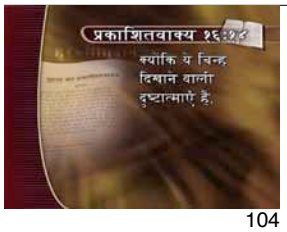

104

क्योंकि ये चिन्ह दिखाने वाली दुष्टात्माएँ हैं,

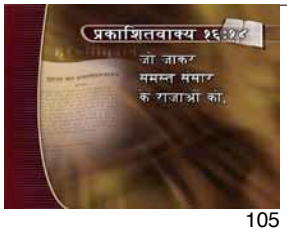

105

जो जाकर समस्त संसार के राजाओं को,

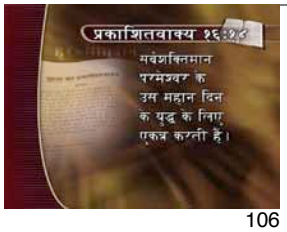

106

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस महान दिन के युद्ध के लिए एकत्र करती हैं।"

प्रकाशितवाक्य १६:१२-१४।

और प्रकाशितवाक्य १६:१६ कहती है:

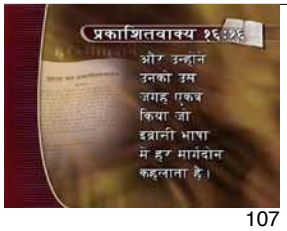

107

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:१६) "और उन्होंने उनको उस जगह एकत्र किया जो इब्रानी भाषा में हरमगिदोन कहलाता है।"

इस अन्तिम संघर्ष में पूरे संसार को भाग लेना है।

यूहन्ना ने लिखा:

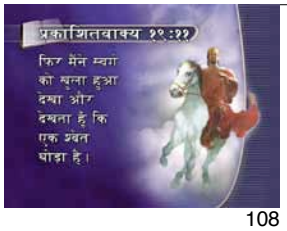

108

( मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १९:११, १४ -१५)

"फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है।

109

और उसका सवार विश्वास योग्य और सत्य कहलाता है और धार्मिकता से न्याय और युद्ध करता है ...

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

110

स्वर्ग की सेनाएं श्वेत स्वच्छ और महीन मलमल पहिने श्वेत घोड़ों पर उसके पीछे -पीछे चलती हैं।

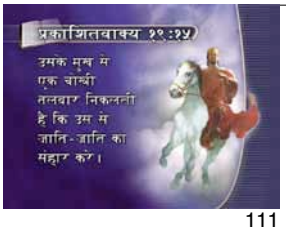


111

उसके मुख से एक चोखी तलवार निकलती है कि उस से जाति -जाति का संहार करे।

112

...वह आप ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की मदिरा का रस कुण्ड रौंदेगा।"

प्रकाशितवाक्य १९:११, १४, १५

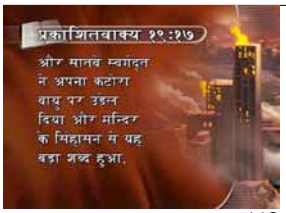


113

( मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:१७, १८, २० -२१ )

"और सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा वायु पर उंडेल दिया और मन्दिर के सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ,

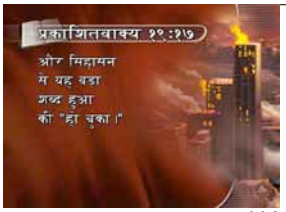


114

और सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ की "हो चुका।"

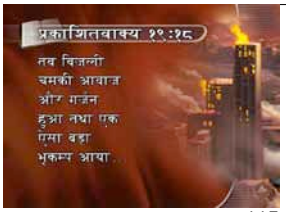


115

तब बिजली चमकी आवाज और गर्जन हुआ तथा एक ऐसा बड़ा भूकम्प आया...

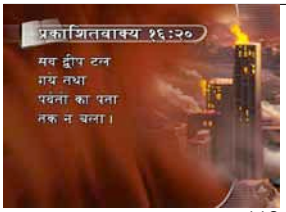


116

सब द्वीप टल गये तथा पर्वतों का पता तक न चला।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

117

मन -मन भर वजन के ओले आकाश से मनुष्यों पर गिरने लगे :

118

तब ओले पड़ने की इस विपत्ति के कारण लोगों ने परमेश्वर की निन्दा की, क्योंकि यह विपत्ति अति कठोर थी।"

प्रकाशितवाक्य १६:१७, १८, २०, २१

119

अधिकतर विद्वान एक मन का वजन ५६ पाउंड बताते हैं। ऐसी ओला वृष्टि से होने वाले विनाश की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

120

किन्तु बाइबिल कहती है कि प्रभु आप ही क्लेश में विघ्न डालेगा जब वह अपने लोगों को विद्रोही ग्रह से स्वतन्त्र कराने हेतु स्वर्ग की सेनाओं के साथ सवार होकर निकलेगा

121

"किन्तु," आप पूछते हैं, "जब विपत्तियाँ गिरनी आरम्भ हो जाती हैं तो मुझे परमेश्वर की सुरक्षा का निश्चय कैसे हो सकता है?" केवल एक ही रास्ता है।

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

122

आपने देखा कि जो लोग मिस्र की अन्तिम विपत्ति से बचाये गये थे उन्होंने परमेश्वर में एक छुड़ाने वाले के रूप में अपना विश्वास और भक्ति का प्रदर्शन मेम्ने के लहू को अपने दरवाजों की चौखटों पर छिड़क कर किया। जब मृत्यु का दूत उनके घरों को छोड़कर निकल गया, तो वे विनाश के मध्य भी सुरक्षित थे। उन्होंने परमेश्वर के आदेशों का पालन और आवश्यक तैयारी की थी।

123

और पुनः परमेश्वर के लोग विपतियों के आने पर बचा लिये जायेंगे यदि उन्होंने परमेश्वर के मेम्ने के बलिदान को स्वीकार कर लिया है और उसके लहू से अपने पापों से शुद्ध हुए हैं।

124

अपने जीवनों से हम आज चुन रहे हैं कि हम किस ओर होंगे– परमेश्वर की ओर या उस विद्रोही दूत की ओर। और मित्र, जब नाश करने वाले दूत अपना काम आरम्भ कर देंगे तो पक्ष बदलने के लिए बहुत देर हो चुकी होगी। अनुग्रह का द्वार सदैव के लिए बन्द हो चुका होगा। क्या आप अभी अपने आपको परमेश्वर की ओर और यीशु के लहू की शरण में ला सकते हैं? सबसे अधिक दुःख भरे शब्द जो मनुष्य बोलेंगे वे यिर्मयाह ८:२० में पाए जाते हैं:

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

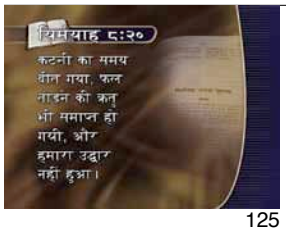

125

( मूलपाठः यिर्मयाह ८:२०)
"कटनी का समय बीत गया, फल तोड़ने की ऋतु भी समाप्त हो गयी, और हमारा उद्धार नहीं हुआ!"

126

एक आस्ट्रेलियाई लकड़हारे की कहानी बतायी जाती है जिसने अपनी झोपड़ी जंगल के किनारे बनाई। यह छोटी होते हुए भी उसके लिए घर थी। एक दिन जब वह काम से घर लौटा,

127

तो वह यह देखकर अत्यन्त दुखित हुआ कि उसका घर सुलगती लकड़ियों का ढेर बन गया था। वहाँ जली हुई लकड़ी के टुकड़े और एकाध धातु के काले टुकड़े शेष रह गये थे। वह बाहर गया जहाँ उसका मुर्गियों का दड़बा रखा था।

128

वहाँ उसे केवल राख का एक ढेर और कुछ जले हुए तार मिले। निरुद्देश्य हो कर उसने मलबे को खोदना आरम्भ किया। उसने अपने पैरों की ओर देखा तो उसे जले हुए पंखों का एक ढेर दिखाई दिया। उसने उसमें ठोकर मार दी। और सोचिए, कि उसे क्या मिला?

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

129

चार छोटे मुर्गी के बच्चे वहाँ से निकल आये जिनके प्राण अपनी प्रेमी माँ के पंखों तले आश्चर्यजनक तरीके से बच गए थे। अति सुन्दर और सार्थक भाषा में परमेश्वर हमें बताता है कि विपतियों के समय वह अपने प्रत्येक बच्चे के लिये क्या करना चाहता है:

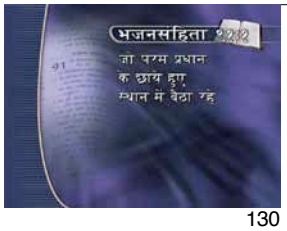

130

( मूलपाठ: भजनसंहिता ९१:१, ४)
"जो परम प्रधान के छाये हुए स्थान में बैठा रहे

131

वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पायेगा ...

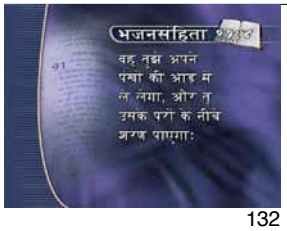

132

"वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा, और तू उसके परों के नीचे शरण पाएगा:

133

उसकी सच्चाई तेरे लिए ढाल और झिलम ठहरेगी।"
भजनसंहिता ९१:४
जी हाँ, जो उसके पीछे चलने का निर्णय करते हैं उनके लिये परमेश्वर ने अद्भुत आश्वासन दिये हैं:

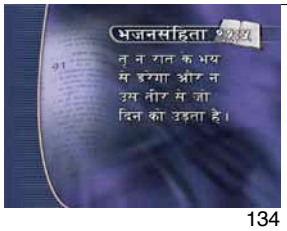

134

"तू न रात के भय से डरेगा और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है;

# २३ - आने वाले संकट में बचाव



135

न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी उजाड़ता है।



136

तेरे निकट हज़ार और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे।



137

परन्तु तू अपनी आंखों से दृष्टि करेगा और दुष्टों के अन्त को देखेगा।



138

क्योंकि तूने यहोवा को जो मेरा शरण स्थान है अर्थात परम प्रधान को अपना निवास स्थान बनाया है;



139

इसलिए न कोई विपत्ति तुझ पर आयेगी न कोई दुख तेरे डेरे के निकट आने पायेगा।



140

क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा ..."

भजनसंहिता ९१:५ -११

# २३ - आने वाले संकट में बचाव

141

( दृश्य)

क्या कुछ इससे भी अधिक आश्वासन देने वाला हो सकता है? क्या आप सर्वशक्तिमान के परों के नीचे शरण लेना नहीं चाहेंगे ताकि उन भारी विपत्तियों से बच सकें? आपका स्वर्गीय पिता संकट और विनाश के समय में आपकी सुरक्षा करना चाहता है।

142

जब आप अपना जीवन उसे देते हैं तो वह एक मुर्गी के समान जो अपने छोटे बच्चों को अपने पंखों में समेट लेती है आपको सुरक्षित रखने में समर्थ होगा। निर्णय आपका है। मुझे पूरा विश्वास है कि परमेश्वर आपका यह निर्णय स्वंय बनाना चाहेगा जिससे आप उसके साथ अनन्त काल तक रह सकें, किन्तु वह ऐसा नहीं कर सकता। केवल आप ही हैं जो यह निर्णय ले सकते हैं। अब और प्रतीक्षा मत कीजिए। यह निर्णय अभी, इसी समय ले लीजिए।